



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 145]
No. 145]

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, जुलाई 24, 1980/श्रावण 2, 1902
NEW DELHI, THURSDAY, JULY 24, 1980/SRAVANA 2, 1902

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके
Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate
compilation

सूचना और प्रसारण मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 21 जुलाई, 1980

संख्या 14/1/80-प्रेस.—केन्द्रीय सरकार, जाच आयोग अधिनियम 1952 (1952 का 60) की धारा 3 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, भारत सरकार के सूचना और प्रसारण मंत्रालय की अधिसूचना सं० 2/1/77-प्रेस, तारीख 29 मई, 1978 का निम्नलिखित और सशोधन करती है, अर्थात् —

उक्त अधिसूचना में भाग 1 के पैरा 2 के स्थान पर निम्नलिखित पैरा रखा जाएगा, अर्थात् —

“2. यह प्रेस आयोग पहले प्रेस आयोग की रिपोर्ट के पश्चात् अब तक के प्रेस के संवर्धन और प्राप्ति के बारे में जांच करेगा और यह सुझाव देगा कि अधिनियम में हल्का किस प्रकार सर्वोत्तम विकास किया जाना चाहिए।

यह विशिष्टित, निम्नलिखित की परीक्षा करेगा और उन पर अपनी सिफारिश करेगा —

- (1) किसी विकासशील लोकतांत्रिक समाज में प्रेस की भूमिका।
- (2) राष्ट्र-स्वातंत्र्य और अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य के संबंध में वर्तमान संवैधानिक गारण्टी; क्या यह प्रेस की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त है या नहीं; इस स्वतंत्रता के अनुरक्षण के लिए विधियों, नियमों और विनियमों की पर्याप्तता और प्रभावकारिता।

- (3) नागरिक की व्यक्तिगत स्वतंत्रता के संरक्षण के लिए संवैधानिक और विधिक रक्षोपाय।
- (4) आर्थिक और राजनैतिक दबावों और स्वतंत्रताओं और प्रबंधन के दबावों से प्रेस की स्वतंत्रता के संरक्षण के साधन।
- (5) विकासशील नीतियों में प्रेस की भूमिका और वे जिम्मेदारियाँ जो इस संभावनी चाहिए।
- (6) सार्वजनिक समस्याओं पर जातवर्धक विचार-विमर्श के लिए एक उद्योग, सामाजिक संस्था और फोरम के रूप में प्रेस।
- (7) प्रेस का स्वामित्व पैटर्न, प्रबन्ध पद्धति और वित्तीय संरचना; संवर्धन, सम्पादकीय स्वतंत्रता और व्यावसायिक ईमानदारी में उनका संबंध।
- (8) चैन समाचारपत्र, उद्योग से उनका संपर्क, स्पर्धा और पाठक के वस्तुनिष्ठ समाचार और स्वतंत्र टीका-टिप्पणी के अधिकार पर उनका प्रभाव।
- (9) समाचारपत्र उद्योग की अर्थ-व्यवस्था; अखबारी कागज, मुद्रण मशीनरी और समाचारपत्र के लिए अन्य निवेश।
- (10) विज्ञापन, सरकारी और प्राइवेट, शैक्षिक और वाणिज्यिक।
- (11) सरकार और प्रेस संबंध और शासकीय अभिकरणों की भूमिका।
- (12) वे संबंध जो प्रेस के विभिन्न तत्वों, अर्थात् प्रकाशकों, प्रबन्धकों संपादकों और व्यावसायिक पत्रकारों आदि के बीच विद्यमान होने चाहिए।
- (13) लघु और मझौले समाचारपत्रों का और भाषायी प्रेस का संवर्धन।
- (14) नियतकालिक प्रेस और विशिष्ट पत्रिकाओं का विकास।

- (15) समाचार-समावेशन और समाचार मूल्य; समाचार और फीचर अधिकरणों का ढांचा और उनका संतुलन; भारत से और भारत में समाचारों का आवागमन।
- (16) वृत्तिक जनशक्ति का प्रशिक्षण, व्यावसायिक स्तर और कार्यकरण के सुधार के प्रयास, पत्रकारिता और जन-संचार में अनुसंधान।
- (17) एक नवीन अन्तर्राष्ट्रीय सूचना व्यवस्था के लिए प्रस्तावों के संदर्भ में अग्रणी पारस्परिक समझ के माध्यम के रूप में पत्रकारिता।
- (18) समाचारपत्र विकास का परिप्रेक्ष्य"।"

एस० एल० कपूर, संयुक्त सचिव

MINISTRY OF INFORMATION AND BROADCASTING

NOTIFICATION

New Delhi, the 24th July, 1980

No. 14/1/80-Press.—In exercise of the powers conferred by section 3 of the Commissions of Inquiry Act, 1952 (60 of 1952), the Central Government hereby makes the following further amendments in the notification of the Government of India in the Ministry of Information and Broadcasting No. 2/1/77-Press, dated the 29th May, 1978, namely :—

In the said notification, for the paragraph 2 of part I, the following paragraph shall be substituted, namely :—

"2. The Press Commission shall inquire into the growth and status of the Press since the first Press Commission reported and suggest how best it should develop in future.

It shall, in particular, examine and make recommendations on :

- (i) The role of the Press in a developing democratic society.
- (ii) The present constitutional guarantee with regard to the freedom of speech and expression; whether this is adequate to ensure freedom of the press; adequacy and efficacy of the laws, rules and regulations for maintaining this freedom.
- (iii) Constitutional and legal safeguards to protect the citizen's right to privacy.

- (iv) Means of safeguarding the independence of the Press against economic and political pressures and pressures from proprietors and management.
- (v) Role of the Press and the responsibilities it should assume in developmental policies.
- (vi) The Press as an industry, a social institution and a forum for informed discussion of public affairs.
- (vii) Ownership patterns, management practices and financial structures of the Press; their relation to growth, editorial independence and professional integrity.
- (viii) Chain newspapers; links with industry, their effect on competition and on the readers' right to objective news and free comments.
- (ix) Economics of the newspaper industry; newsprint, printing machinery and other inputs for newspapers.
- (x) Advertising—Government and private, educational and commercial.
- (xi) Government—Press relations and the role of official agencies.
- (xii) Relations that should subsist between different elements of the Press, namely, publishers, managers, editors and professional journalists, and others.
- (xiii) Growth of small and medium papers and of the language press.
- (xiv) Development of the periodical press and specialised journals.
- (xv) News coverage and news values; structure and functioning of news agencies and features agencies; flow of news to and from India.
- (xvi) Training of professional manpower; steps to improve professional standards and performance; research in journalism and mass communication.
- (xvii) Journalism as a means of better mutual understanding in the context of proposals for a new international information order.
- (xviii) Perspective of newspaper development."

S. L. KAPUR, Jt. Secy.